(iv) दक्षिणी रूस ——— गार्डन चाइल्ड, पीक

=

I जर्मनी

(क) मध्य जर्मनी में स्थित स्केन्डेनेविया नामक स्थान कभी भी विदेशी आधिपत्य में नहीं रहा, फिर भी यहां के निवासी भारोपीय भाषा बोलते हैं इससे सिद्ध होता है कि भारोपीय भाषा का मूल स्थान यही था।

(ख) जर्मनी से कुछ ऐसी प्राक् ऐतिहासिक स्मारक पाये गये हैं जिन्हें आर्यों से सम्बन्धित किया गया।

(ग) आर्यों की शारीरिक विशेषताएं भी उन्हें जर्मनी का आदिवासी बताती है।

लेकिन अनेक तथ्यों के आधार पर आर्यों का जर्मन होना स्वीकार नहीं किया जा सकता।

II हंगरी

विभिन्न भारोपीय भाषाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने के पश्चात विभिन्न विद्वानों ने बताया है कि आर्य मूलतः ऐसे स्थान में रहते थे जहां पर्वत नदियां झील इत्यादि थे तथा गेहूं जौ की प्रचुरता

रूप से खेती की जाती थी और गाय, बैल, भेड़ कुत्ता इत्यादि पशु पाये जाते थे ये सभी विशेषताएँ ऐसी प्रदेश अथवा डेन्यूब नदी घाटी के प्राप्त हुई है। अतः यही आर्यों का मूल निवास रहा होगा। किन्तु यह मत भी असंगत है।

III द० रूस

समस्त उपलब्ध पुरातात्विक एवं भाषा शास्त्रीय सामग्रीयों के आधार पर विद्वानों का मत है कि द० रूस आर्यों का मूल निवास था

(क) द० रूस के किये गये उत्खनन से लगभग उसी प्रकार के संस्कृति के अवशेष मिले है जो आर्यों के समय के थे।

(ख) यहां की खुदाई से अश्व के अवशेष मिले है जो आर्यों का प्रिय पशु था

(ग) पिगर के अनुसार आर्य द० रूस के एक विस्तृत प्रदेश में निवास करते थे

(घ) द० रूस के त्रिपोल्जे से लगभग 30,000 ई० पूर्व के मृदभांड प्राप्त हुए है इस आधार पर नेहरिंग ने द० रूस को आर्यों का आदि प्रदेश बताया है।

(ङ) भारोपीय तथा मध्य रूस की फिनोउग्रीन (Fino Ugrian) भाषाओं के आश्चर्यजनक समानता दिखायी देती है जो इस बात की सूचक है कि भारोपीय तथा मध्य रूस की जाति में प्राचीन काल से ही सम्पर्क था

अतः द० रूस को आर्यों का मूल निवास माना जा सकता है।

//